संस्थाओं के पास जो जमीन है, उसको लेकर उस पर गल्ला पैदा किया जा सकता है।

आज सवेरे जब मैंने सुना कि 30 हरिजनों को जला दिया गया है, तो मुझे रोना आ गया। मैं सोचता हूं कि जिन नब्बे प्रतिशत गरीबों और हरिजनों से हमको यहां भेजा है, आज उनको जलाया जाता है। गृह मंत्री महोदय इसके बारे में क्या कर रहे हैं? एक बार बिहार में जब तीन आदमियों को जला दिया गया था, तो श्रीमती इंदिरा गांधी ने श्री मिर्धा को विमान से वहां भेजा था। मैं चाहता हूं कि गृह मंत्री भी घटना स्थल पर जाये। वह हम को इजाजत दें, कि हम जाकर जांच करें कि कैसे यह जुल्म और ज्यादती होती है।

दूसरी पार्टियां तो पूंजीपति हैं ही। यद्यपि हम ऊपर से समाजवादी हैं, मगर भीतर से हम भी पूंजीवादी हैं। बड़े-बड़े कांग्रेसमैनों की जायदादों को जब्त क्यों नहीं कर लिया जाता?

पहले जमाने में राजा लोग टोपी सीकर या हल जोतकर खाते थे। वे राजधन का प्रयोग अपने लिए नहीं करते थे। मैं सन्यासी हूं। मैं भी भिक्षा से अपना निर्वाह करता हूं और अपनी सारी तनख्वाह का पैसा स्कूल, कालेजों को दे देता हूं। यही धर्म है।

आज स्कूलों में क्या हालत हैं? शिक्षक 7 दिन में 3 घंटे पढ़ाते हैं और 1200 रुपये वेतन लेते हैं। आज छोटे स्कूलों की स्थिति यतीमखाने जैसी हो गई है। बड़े आदमियों के लड़के देहरादून में पढ़ते हैं। इस स्थिति में क्या कोई गरीब आदमी का लड़का कभी कलैक्टर या उच्चाधिकारी बन सकेगा? आज जो आदमी ऊंचे पदों पर बैठे हुये हैं, वे गरीब आदमियों का कल्याण कैसे करेंगे?

गांधी जी ने कहा था कि किसी हरिजन की लड़की को राष्ट्रपति बनाया जाये। अभी तक ऐसा क्यों नहीं किया गया है? अगर हम लोग गांधीवादी हैं, तो किसी मेहतर की लड़की को राष्ट्रपति बनाना चाहिए। हरिजनों और मेहतरों में से एस० पी० और कलैक्टर बनाये जायें। अगर फिर भी कोई गड़बड़ हो, तो उन लोगों को सजा दी जाये।

क्लर्क और दूसरे लोग 8 घंटे काम करते हैं। हमारे किसान सारा दिन हल चलाते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि जो सदस्य सभापति के आसन पर बैठते हैं, वे केवल दो घंटे काम करते हैं और उसके बाद खिसक जाते हैं। क्या उनकी ड्यूटी सिर्फ दो घंटे की है? यह भी भ्रष्टाचार है।

मेरे पांव में दर्द होता है, इसलिए मैं इस ठंडक में नहीं बैठ सकता हूं, वरना मैं सारे दिन यहां बैठा रहूं। जब मुझे 51 रुपये रोज मिलते हैं तो मैं क्यों न सारा दिन यहां पर हाजिर रहूं?

मेरे कालेज का एक लड़का डा० सी० एल० इंदीवर यादव विश्व भर में 9 लाख प्रतियोगियों में से अध्यात्म और विज्ञान में पहले नम्बर पर आया। लेकिन उसको कोई सम्मान नहीं दिया गया, जबकि खेल वालों का सम्मान हो रहा है। क्या खेल से ही गेहूं निकलेगा, या दूध निकलेगा, या टेलीवीजन से दूध निकलेगा? यह सब काम बन्द करके सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करना चाहिए। किसानों पर तो सीलिंग लगा दी गई है, लेकिन पूंजीपतियों पर कोई सीलिंग नहीं लगाई गई है।

---

15.35 hrs.

## ADVOCATES (AMENDMENT) BILL*

(Amendment of section 46)

**डा० लक्ष्मी नारायण पांडेय** (मंदसौर): मैं प्रस्ताव करता हूं कि अधिवक्ता अधिनियम, 1961 का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the

---

*Published in Gazette of India Extraordinary Part II, Section 2, dated 2-5-75.

Advocates Act, 1961".

*The motion was adopted.*

डा० लक्ष्मीनारायण पांडेय : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं ।

---

15.36 hrs.

## CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL*

(*Insertion of new article* 326A)

SHRI C. K. CHANDRAPPAN (Tellicherry): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India".

*The motion was adopted.*

SHRI C. K. CHANDRAPPAN: I introduce the Bill.

---

15.37 hrs.

## CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL*

(*Amendment of Eighth Schedule*)

SHRI C. K. CHANDRAPPAN: I beg to move for leave to introduce a Bill to amend the Constitution of India.

SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE (Sangli): I want to oppose this motion for leave to introduce this Bill. The controversial decision taken by the Sahitya Academy to grant recognition to Konkani has provoked strong reaction and Sharp opposition in the States of Goa and Maharashtra. Dr Suniti Kumar Chatterjee, President of the Sahitya Academy while delivering the inaugural speech at the All India Konkani Sahitya Parishad in Panaji Goa in February 1974 has prejudged the issue when he said:

"Konkani which by its own right should be recognised as one of the major languages of India has for the last few centuries been under a cloud."

It was also surprising to note that Dr. Chatterjee should also have felt the need of going out of his way to express an opinion at that time regarding the political status of Goa. The propriety of the remarks made by Dr. Chatterjee even before the issue was duly considered by the Sahitya Academy is highly questionable and his attitude was not impartial. Under such abnormal circumstances, the object of the Bill "... to satisfy the feelings and aspirations of the people of several regions" would be served only by referring the Bill first to the legislatures of the States, namely Goa and Maharashtra for expressing their views thereon. Otherwise we would be setting a bad precedent by granting leave to introduce such a controversial Bill which is most likely to defeat its own purpose and object.

SHRI C. K. CHANDRAPPAN: The point he raised shows that there is need for discussion. I thought that Mr. Gotkhinde would oppose the introduction of the Bill on the basis of some constitutional arguments. His submissions if I may say so shows that there is need for discussion. I do not find that there is any reason not to introduce the Bill. We have had in this House itself several Bills to amend the Eighth Schedule, including Konkani and in fact various Bills were introduced. I do not think there is any substance in his opposition.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I should also like to advise Mr. Gotkhinde

---

*Published in Gazette of India Extraordinary Part II, section 2, dated 2nd May, 1975.